

Padma Shri



SHRI GHULAM MOHAMMAD ZAZ

Shri Ghulam Mohammad Zaz, manufacturer of handmade musical instruments like Sitaar, Rabab, Tawoos, and Santoor, is widely recognized across the country and overseas for his role in manufacturing quality musical instruments, especially Santoor.

2. Born on 1st January, 1948, Shri Zaz had an inclination towards musical instruments in his childhood and used to watch his grand father Shri Rehman Joo Zaz, father Shri Abdul Ahad Zaz, and uncle Shri Ghulam Rasool Zaz manufacturing musical instruments and by that time started working with them besides his schooling. Zaz family was well recognized at the time of Maharaja and some of the musical instruments manufactured by them are still displayed in the museum of Srinagar. Besides Kashmiri Musical Instruments like Sitar Kashmiri, Santoor Kashmiri, Saazi Kashmiri, Sarang Kashmiri, and Rabab, some Indian Musical Instruments like Indian Santoor, Dilruba, Tanpora, and Surbahaar were also manufactured by the Zaz family. The musical instruments manufactured by the Zaz family had amazing tonal qualities which were relished and played by the elite class of society.

3. The passion and love for the art of manufacturing musical instruments of Shri Zaz was a lot, that he declined some good offers of jobs and continued the profession of his forefathers and took their legacy forward. He gained tremendous experience in his field from his forefathers who were working in the same profession for seven generations. He is eighth in the line and perhaps the last one as his three daughters have taken the other professions for their livelihood.

4. Kashmiri Santoor manufactured by Shri Zaz was introduced in Indian Classical Music and also played in the bollywood by Shri Pandit Shiv Kumar Sharma. The santoor had some extraordinary tonal qualities that no other person could have manufactured such a Masterpiece and was played on a lap rather than a table. Shri Bajan Sopori also played Santoor manufactured by Shri Zaz.

5. Shri Zaz has contributed in the field of art of manufacturing quality musical instruments, especially Santoor which has incredible tonal qualities and spreads music of love and peace.



श्री गुलाम मुहम्मद जज़

श्री गुलाम मुहम्मद जज़ सितार, रबाब, तावूस और संतूर जैसे हस्तनिर्मित वाद्ययंत्रों के निर्माता, विशेष रूप से संतूर के निर्माण में अपनी विशेषज्ञता के लिए देश-विदेश सुप्रसिद्ध हैं।

2. 1 जनवरी, 1948 को जन्मे, श्री जज़ का बचपन से संगीत वाद्ययंत्रों की ओर झुकाव था और वह अपने दादा श्री रहमान जू जज़, पिता श्री अब्दुल अहद जज़ और चाचा श्री गुलाम रसूल जज़ को संगीत वाद्ययंत्र बनाते हुए देखा करते थे और उन्होंने स्कूली शिक्षा के साथ-साथ उनके साथ काम करना शुरू कर दिया था। महाराजा के समय जज़ परिवार अत्यंत प्रतिष्ठित था और उनके द्वारा निर्मित कुछ वाद्ययंत्र आज भी श्रीनगर के संग्रहालय में प्रदर्शित हैं। जज़ परिवार द्वारा सितार कश्मीरी, संतूर कश्मीरी, साज़ी कश्मीरी, सारंग कश्मीरी और रबाब जैसे कश्मीरी संगीत वाद्ययंत्रों के अलावा, कुछ भारतीय संगीत वाद्ययंत्र जैसे भारतीय संतूर, दिलरुबा, तानपुरा और सुरबहार भी निर्मित किए गए थे। जज़ परिवार द्वारा निर्मित वाद्य यंत्रों की तानें विलक्षण होती थी जिन्हें समाज के आभिजात्य वर्ग द्वारा अत्यधिक पसंद किया जाता था और बजाया जाता था।

3. श्री जज़ का वाद्ययंत्र निर्माण कला के प्रति प्यार और जुनून इतना अधिक था कि उन्होंने नौकरी के कुछ अच्छे प्रस्तावों को ठुकरा दिया और अपने पूर्वजों के पेशे को चुना तथा अपनी पारिवारिक विरासत को नई ऊंचाई प्रदान की। उन्होंने सात पीढ़ियों से वाद्ययंत्र निर्माण में लगे अपने पूर्वजों से विपुल अनुभव प्राप्त किया। वह अपने परिवार की आठवीं पीढ़ी और संभवतः आखिरी पीढ़ी भी हैं, क्योंकि उनकी तीन बेटियों ने अपनी आजीविका के लिए अन्य व्यवसाय चुने हैं।

4. श्री जज़ द्वारा निर्मित कश्मीरी संतूर को भारतीय शास्त्रीय संगीत में शुरू किया गया और इसे श्री पंडित शिव कुमार शर्मा द्वारा बॉलीवुड में भी बजाया गया। उनके द्वारा निर्मित संतूर की तानों में कुछ असाधारण गुण थे जो कोई अन्य व्यक्ति इस तरह की उत्कृष्ट कृति का निर्माण नहीं कर सकता और खास बात यह थी कि इसे मेज पर रखकर बजाने की बजाय गोद में रख कर बजाया जाता है। श्री भजन सोपोरी ने भी श्री जज़ द्वारा निर्मित संतूर बजाया।

5. श्री जज़ ने उत्कृष्ट वाद्ययंत्रों, विशेष रूप से संतूर निर्माण की कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है जिसकी तानों में अद्भुत गुण हैं और यह प्रेम एवं शांति से भरा संगीत प्रस्फुटित करता है।